International Journal of Trend in Scientific Research and Development, Volume 1(2), ISSN: 2456-6470
www.ijtsrd.com

आदिकवि वाल्मीकिः रामकथा के प्रथम गायक

डॉ. मोहन मिश्र

युनिवर्सिटी प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, ति०माँ०भा० विश्वविद्यालय, भागलपुर

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्।।

संस्कृत साहित्य के प्रथम महाकवि वाल्मीकि हैं, इसलिए उन्हें आदिकवि भी कहते हैं। महर्षि च्यवन की परम्परा में वाल्मीकि ऋषि थे।[1] उनका स्थान तत्कालीन महर्षियों में सर्वोच्च था। वाल्मीकि की लोक–कल्याण भावना अपरिमित थी। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने लोक–पथ प्रशस्त बनाने के उद्देश्य से रामायण की रचना की थी। विचारणा की जिस उदात्त पृष्ठभूमि पर राम–कथा प्रतिष्ठित की गई है, उसका उद्भव आदिकवि के हृदय से हुआ। उनके व्यक्तित्व का विकास वैदिक ऋषियों के समान हुआ था। समग्र भारत के वनों, पवन, पर्वतोपनद, सभ्यता और संस्कृति का प्रत्यक्ष ज्ञान उन्हें था। रामायण के अनुसार वाल्मीकि की वाणी कभी असत्य नहीं हो सकती थी। महर्षि भावितात्मा थे, उनकी बुद्धि उदार थी।

महर्षि वाल्मीकि के द्विज होने, उनके आरम्भिक जीवन से ही सद्कार्य में निरत होने विषयक तथ्यों को लेकर इतना विविधतापूर्ण साहित्य उपलब्ध होता है कि मतामत का निर्धारण कर पाना प्रायः असम्भव–सा जान पड़ता है। कोई इन्हें भृगु वंशीय[2], कोई प्राचेतस[3], कोई शूद्रा का पति, कोई साहसिक आदि निकृष्ट कर्म करने वाला[4] सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। अतः यदि महर्षि वाल्मीकि के काल–निर्धारण से पूर्व (के साथ) ही इन अनेकतः मूलक मगर विरोधी बातों का दिग्दर्शन कर लिया जाए तो अप्रासंगिक अथवा अनुचित न होगा। इस पुराण तथा मध्यकालीन आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के साहित्य में प्रचलित रामाख्यान या रामायणों के कारण हैं।

महर्षि वाल्मीकि के दस्यु जीवन का सर्वप्रथम उल्लेख स्कन्द पुराण के वैष्णव खण्ड[5], आवन्त्य खण्ड[6], प्रभासखण्ड[7] तथा नागर खण्ड[8] में हैं। वहां उनके जीवन की कुछ कथाओं में इन्हें आरम्भिक जीवन में दस्यु दिखलाया गया है दूसरी ओर, राम–नाम के प्रभाव से इन्हें एक ऋषि के रूप में रामायण का कर्ता दर्शाया गया है। वैष्णव खण्ड के अतिरिक्त अन्य खण्डों में महर्षि वाल्मीकि को ब्राह्मण –पुत्र कहा गया है, परन्तु वैष्णव खण्ड में इनकी उत्पति एक शैलूषी से दिखाई गई है।

महर्षि कश्यप और अदिति के नवम पुत्र वरुण (आदित्य) से इनका जन्म हुआ। इनकी माता चर्षणी और भाई भृगु थे। वरुण का नाम प्रचेत भी है। महर्षि वाल्मीकि के सम्बन्ध में भ्रान्ति फैलाने का श्रेय मुख्यतः तथाकथित रामायणों को है जिनका निर्माण शिव–पूजा की प्रतिद्वन्द्वता में रामोपसना को उसके ऊपर प्रतिष्ठित करना था। इन रामायणों के लेखकों ने प्रायः यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि राम, राम–नाम पतितातिपतित का भी उद्धार कर सकता है और इसके उद्धरण के रूप में महर्षि वाल्मीकि को प्रस्तुत करना उन्हें सरल लगा क्योंकि एक तो वे राम–कथा के प्रणेता थे, दूसरे ऋषि के रूप में वैदिक और औपनिषदिक साहित्य में उनका उल्लेख न मिलने के कारण उनके उक्त कथन को खण्डित करने के लिये अवकाश भी न था।

पुराणों की तालिका के अनुसार महाभारत युद्ध से उन्हें करीब तीन सौ वर्ष पूर्व होना चाहिये। महाभारत का समय सम्भवतः जैसा कि आगे प्रतिपादित किया गया है, 1450 ई. पू. के आसपास है। इस गणना के अनुसार रामायण का समय 1750 ई. पू. के लगभग होना चाहिये। डॉ. राधा कुमुद मुखर्जी के अनुसार महाभारत कालीन कुरूक्षेत्र का समय सामान्यतः 1485 या 1425 वर्ष ई. पू. स्थिर होता है। इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि के विषय में वाह्य विचार प्रस्तुत करते हैं और उनका व्यक्तित्व अस्पष्ट ही रह जाता है। यह विचारणीय है।

आदिकवि वाल्मीकि के जीवन–चरित्र व उनके व्यक्तित्व के विषय में अनेक किंवदंतियाँ प्रचलित हैं, जिनकी सत्यता प्रमाणित नहीं है, विष्णुपुराण के अनुसार वाल्मीकि भृगुवंषी ऋषि थे तथा वे वैवस्वत मन्वन्तर में होने वाले 24वें व्यास थे। एक अन्य प्रमाण के अनुसार चौबीसवें व्यास वाल्मीकि का मूल नाम 'ऋक्ष' था, वे वैदिक ऋषि थे, जिन्होंने महाभारत काल से लगभग 2000 वर्ष पूर्व आदिकाव्य रामायण की रचना की। लोक में प्रचलित एक जनश्रुति के अनुसार वाल्मीकि प्रारम्भिक जीवन में 'लुटेरे' या 'डाकू' थे। अध्यात्म रामायण के अनुसार वाल्मीकि का नाम 'रत्नाकर' था। वे यात्रियों को लूटा करते थे। सप्तर्षियों या नारद मुनि के उपदेश से उन्होंने दस्युवृत्ति का परित्याग किया। कुछ लोग मानते हैं कि वे जाति से चाण्डाल थे। इसी आधार पर 'हरिजन' वाल्मीकि को अपना पूर्वज मानते हैं। परन्तु ये बातें निराधार प्रतीत होती हैं। इतिहास पुराण के अनुसार वाल्मीकि प्रचेता (वरुण) के वंश में उत्पन्न हुए थे और च्यवन भार्गव के पुत्र थे। प्रसिद्ध बौद्धकवि अश्वघोष ने लिखा है कि

जिस पद्य का निर्माण च्यवन ऋषि न कर सके उसका निर्माण उनके पुत्र ने किया –

वाल्मीकिरादौ च ससर्ज पद्यं।

जग्रन्थ यन्न च्यवनो महर्षिः।।[9]

महाभारत वनपर्व में उल्लेख है कि च्यवन तप करते हुए 'वल्मीकि' हो गया – 'स वल्मीकोऽभवदृषिः' च्वयन वाल्मीकि का पुत्र वाल्मीकि कहलाया। मूलनाम उसका 'ऋक्ष' था। महाभारत में 'रामायण' और वाल्मीकि का स्पष्टतरू अनेकबार उल्लेख हुआ है। रामायण का एक श्लोक भी द्रोणपर्व में उद्धृत है– –'अपि चायं पुरा गीतः श्लोको वाल्मीकिना भुवि'। कहा जाता है कि वाल्मीकि को सप्तऋषियों ने धार्मिक जीवन की दीक्षा दी थी। उन्होंने बहुत समय तक निरन्तर समाधि लगाई। जब वे अपनी समाधि से उठे तो उनके चारों ओर दीमकों ने 'बमी'(बाँबी) बना ली थी और वे उससे बाहर निकले थे। वे अयोध्या के समीप ही गंगा नदी के किनारे रहते थे। राम अपने वनवास के समय सर्वप्रथम उनके ही आश्रम पर पहुचे थे। (द्रष्टव्य रामायण, अयोध्याकांड, सर्ग 56), उन्हें राम के जीवन की विशेष घटनाओं का ज्ञान था। वे उनके उदात्त गुणों से बहुत प्रभावित थे। एक दिन वे अपने आश्रम पर आए हुए नारद ऋषि से मिले और उनसे आदर्श पुरुष का जीवनचरित पूछा। उत्तर में नारद ने राम के जीवन का वर्णन किया। यह ज्ञात होता है कि वाल्मीकि राम के जीवन के विषय में प्रामाणिक और निश्चित विवरण ज्ञात करना चाहते थे। नारद से मिलने के बाद उनका ध्यान राम की ओर ही केन्द्रित हो गया और वे इसी अवस्था में अपने आश्रम के समीप बहने वाली तमसा नदी के तट पर गए। मार्ग में उन्होंने देखा कि एक व्याध ने क्रौंच पक्षी को मार दिया है। क्रौंची अपने पति एवं प्रिय के वियोग में बहुत दुःखित होकर रो रही थी। यह देखकर वाल्मीकि ऋषि का हृदय द्रवित हो गया और उन्होंने व्याध को शाप दिया कि वह बहुत काल तक दुःखित रहे। उनका यह करुणाजन्य शाप पद्य रूप में परिणत होकर प्रकट हुआ, जो कि निम्न रूप में है –

मा निशाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

वे पूजा करके अपने आश्रम को लौटे। तत्पश्चात् ब्रह्मा उनके सामने आए। उन्होंने आशीर्वाद और आदेश भी दिया कि वे राम को शक्ति प्रदान की कि वह राम के वर्तमान भूत और भविष्यत् जीवन को साक्षात् देख सकेंगे। ब्रह्मा के जाने के पश्चात् वाल्मीकि ने काव्य की रचना प्रारम्भ की, जिसको आगे चलकर 'रामायण' के नाम से पुकारा गया।

संस्कृत साहित्य विश्व की शीर्षस्थ साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है, रामायण अपने मूल रूप में संस्कृत साहित्य का आदि महाकाव्य और कतिपय परवर्ती महाकाव्यों, काव्यों का प्रेरणास्रोत है।[10] निस्सन्देह महान् कवि वाल्मीकि की महती कृति है। वह भारतीय परिवारों की धर्म–पोथी, भारतीय आचार–विचार, संस्कार–सम्बन्धों का आदर्श ग्रन्थ और भारत की चिरन्तन भक्ति–भावना, ज्ञान–भावना तथा मैत्री–भावना की प्रतिनिधि पुस्तक है। रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है।[11] इसमें रामकथा आद्योपान्त वर्णित है। इसमें सात काण्ड हैं – बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड। इसमें लगभग 24 सहस्र श्लोक हैं, अतः इसे 'चतुर्विंशति साहस्री संहिता' भी कहते हैं। यह मुख्यतः अनुष्टुप् श्लोकों में है। गायत्री मन्त्र में 24 वर्ण होते हैं, अतः यह मान्यता है कि उसको आधार मानकर 24 हजार श्लोक बनाए गए हैं और प्रत्येक एक हजार श्लोक के बाद गायत्री के नए वर्ण से नया श्लोक प्रारम्भ होता है। रामचरित का सर्वांगपूर्ण वर्णन होने के कारण यह धार्मिक ग्रन्थ एवम् आचार संहिता माना जाता है। यह परकालीन कवियों, नाटककारों और गद्य लेखकों का उपजीव्य काव्य माना जाता है। भाव, भाषा–शैली और परिष्कार के कारण रामायण का स्थान भारतीय काव्यों में सर्वोच्च माना जाता है।

रामायण में हृदय पक्ष का प्राधान्य होने पर भी कलापक्ष की अवहेलना नहीं है। रामायण का प्रणेता शैली, चरित्र–चित्रण तथा वर्णन की शक्ति में अपूर्व है। उसकी शैली सरल, उत्कृष्ट, अलंकृत और सुसंस्कृत है।[12] अप्रचलित शब्दों का इसमें अभाव है लेकिन इसका यह अभिप्राय नहीं है कि सरल होने के कारण यह ग्रन्थ काव्य गौरव की दृष्टि से मूल्यहीन हो। वस्तुतः कवि ने सरल शब्दावली को लेकर जहाँ एक ओर पाठक को असाधारण रूप में प्रभावित किया है, वहीं दूसरी ओर रस–व्यंजना, छन्द–योजना और अलंकारों के प्रयोग द्वारा अपने ग्रन्थ को अति रमणीय बना दिया है। इसकी रचना में सभी रसों का समुचित परिपाक है। उपमा, रूपक और स्वभावोक्ति का अत्युत्तम रीति से प्रयोग किया गया है। वाल्मीकि समग्र कविसमाज के उपजीव्य हैं।[13] वाल्मीकि का यह महाकाव्य पृथ्वीतल को विदीर्ण कर उगने वाले उस विराट् वट वृक्ष के समान है, जो अपनी शीतल छाया से भारत के समस्त मानवों को आश्रय देता हुआ प्रकृति की विशिष्ट विभूति के समान अपना मस्तक ऊपर उठाए हुए खड़ा है। रामायण में रामकथा के साथ ही अनेक रोचक उपकथाएँ भी सन्निहित हैं।[14] इनका सन्निवेश विशेषकर बालकाण्ड तथाउत्तरकाण्ड में है। इसमें प्रमुख हैं – राजा सगर के पुत्रों की उत्पत्ति तथा अश्वमेध यज्ञ का आयोजन (1/38), समुद्रमन्थन और विविध रत्नों की प्राप्ति (1/45), त्रिशंकु के यज्ञ की तैयारी एवम् उसे शाप (1/58), मेनका द्वारा विश्वामित्र का तपोभंग (6/63), राजा नृग का शाप (7/54), ययाति को अपने पुत्र से यौवन की प्राप्ति, शम्बूक–वध (7/76), बुध और इला से पुरूरवा की उत्पत्ति आदि।

कुछ लोग महर्षि वाल्मीकि को निम्न जाति का बतलाते हैं। पर 'वाल्मीकि रामायण' तथा अध्यात्मरामायण में इन्होंने स्वयं अपने को प्रचेता का पुत्र कहा है। मनुस्मृति में प्रचेता को

वशिष्ठ, नारद, पुलस्त्य कवि आदि का भाई लिखा है। स्कन्दपुराण के वैशाखमहात्म्य में इन्हें जन्मान्तर का व्याध बतलाया है। इससे सिद्ध है कि जन्मान्तर में ये व्याध थे। व्याध जन्म के पहले भी 'स्तम्भ' नाम के श्रीवत्सगोत्रीय ब्राह्मण थे। व्याध जन्म में 'शंख' ऋषि के सत्संग से राम नामके जप से ये दूसरे जन्म में 'अग्नि शर्मा' (मतान्तर से रत्नाकर) हुए, वहाँ भी व्याधों के संग से कुछ दिन प्राक्तन संस्कारवश व्याधकर्म में लगे फिर सप्तऋषियों के सत्संग से 'मरा–मरा' जप कर – बाँबी पड़ने से वाल्मीकि नाम से ख्यात हुए और बाल्मीकि–रामायण की रचना की।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि भले ही वाल्मीकि का स्थितिकाल तथा उनकी कृति का रचनाकाल विवादास्पद हो और अभी तक सही–सही ढंग से आँका भी न गया हो। किन्तु उनकी रचना 'रामायण' का संस्कृत काव्य जगत् में सर्वोच्च स्थान है। यह वह रचना है जिसने अनेकानेक शैलियों में रामचरित लिखने की प्रेरणा परवर्ती कवियों को दी। इससे प्रेरणा प्राप्तकर अनेक कवियों ने संस्कृत साहित्य जगत में सफल कविकर्म प्रस्तुत किए हैं।

सन्दर्भ सूची –

[1] कृत्तिवास रामायण – "च्यवन मुनिर पुत्र नाम रत्नाकर"

[2] रामायण के पश्चिमोत्तर पाठ के अन्तिम श्लोक में वाल्मीकि को भार्गव की उपाधि दी गयी है, 7/11/31

[3] प्रचेता तथा वरुण एक हैं (कुमार० 2/21) ऋग० (6/65, 10/16) में भृगु का नाम वरुण माना गया है तथा शतपथ ब्राह्मण में इसका स्पष्ट उल्लेख है कि भृगु वरुण के पुत्र हैं तथा भागवत पुराण में वरुण की पत्नी चार्वणी से दो पुत्र भृगु और वाल्मीकि हुए।

[4] वाल्मीकिश्चातं भगवान् युधिष्ठिरमिदं वचः।
विवादे साग्निमुनिभिर्ब्रह्मघ्नो वै भवनीति॥
उक्त क्षणेन चाविष्टस्टोनाधर्मेण भारत।
सोहमीशानम नधममोधं शरणं गतः॥ (महाभारत 8)

[5] स्कन्द पुराण, वैष्णव खण्ड, अध्याय 21

[6] स्कन्द पुराण, अवन्ती खण्ड, अध्याय 24

[7] स्कन्द पुराण, प्रभास खण्ड, अध्याय 298

[8] स्कन्द पुराण, नगर खण्ड, अध्याय 124

[9] बुद्धचरितम् 1-43

[10] गैरोला, वाचस्पति, संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, तृतीय संस्करण(1978), पृष्ठ–100

[11] द्विवेदी, कपिलदेव, संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, 1985, पृष्ठ–103

[12] सिंह, विजय पाल, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शिक्षा भारती, दिल्ली, 1997, पृष्ठ–43

[13] उपाध्याय, बलदेव, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन वाराणसी–221010, दशम संस्करण (1978), पृष्ठ– 38

[14] चौधरी, रामविलास, संस्कृत साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली–110007, प्रथम संस्करण (1998), पृष्ठ–10